No. २३८४ क

Title महाविद्यायाः शान्तिनामक स्तोत्रम्

Author

Extent १५ पत्र Age

Subject तन्त्र

महाविद्यायाः शान्तिनामकस्त[illegible]

नं. १३८४

नं० ~~१८०२~~ ३३ ६

महाविद्यायाः शान्तिनामकस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ संकल्पः ॥ ॐ पूर्वोक्तगुणविशेषणविशिष्टायां यथाना
मगोत्रस्य स्वस्य अन्यस्य च सकलारिष्टग्रहजन्यदुःखध्वंसपूर्वकं भूतप्रेतपिशाचरा
क्षसवेतालनिशाचरज्वरादिजन्यदुःखव्याधिकृतिमदुःखध्वंसपूर्वकं महाशां
तिकामः श्रीमहाविद्यायाः सकलकर्मदानुकूलमहाशांतिकनामस्तोत्रपाठमहं करि
ष्ये ॥ तेनैव स्तोत्रेण दशदिनपर्यंतमहोरात्रे होममहं करिष्ये ॥ इति संकल्पः ॥ ॐ न
मो भगवत्यै श्रीमहाविद्यायै नमः ॥ अस्य श्रीमहाविद्यास्तोत्रस्यार्पेमा ऋषिर्दे
वता कालिका गायत्री छंदो जगती सदाशिवो देवता सदाप्रज्ञा ऋध्यर्थे मनो
वांछितसिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः ॥ ॐ महाविद्यां प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मितां

चिंतितां क्षीरातरूपेण मंत्रां हृदयनंदिनीं उत्तमां सर्वविद्यानां सर्वभूतवशंकरी
म् ॐ कुलकरीं गोत्रकरीं धनकरीं पुष्टिकरीं वृद्धिकरीं रक्षाकरीं सर्वशत्रुक्षयंकरीं
उत्साहबलवृद्धिनीं सर्वविघ्नकार्यां चिंतितां सर्वग्रहोच्चाटिनीं ॥ पुत्रपौत्राभिवर्द्धिनीं
आयुरारोग्यमैश्वर्यमभिवर्द्धिनीं सर्वभूतस्तंभिनीं द्राविणीं मोहिनीं सर्वाकर्षि
णीं सर्वलोकवशंकरीं सर्वराजवशंकरीं सर्वयंत्रप्रभेदिनीं ॥ एकाहिकं द्व्याहिकं त्र्या
हिकं चातुर्थिकं पंचाहिकं षष्ठ्याहिकं साप्ताहिकं अष्टाहिकं अर्द्धमासिकं मासिकं
षाण्मासिकं सांवत्सरिकं वैज्वरं प्रैतिकं वातिकं पैत्तिकं श्लैष्मिकं सान्निपातिकं कुष्ठरो
गं जठररोगं मुखरोगं प्रमेहरोगं शुष्काविशिरस्ताप विस्फोटकादि विनाशय स्वाहा

२ ॐ वेतालज्वररात्रिज्वरदिवसज्वराग्निज्वरराक्षसज्वरपिशाचज्वरब्रह्मराक्षसज्व
रप्रस्वेदज्वरविषमज्वरतीव्रज्वरमायाप्रयोगाभिचारिकज्वरदृष्टिज्वरऽप्रपस्मा
रादिज्वरप्रयोगादिविनाशयस्वाहा॥ऽक्षिशूलकुक्षिशूलकर्णशूलघ्राण
शूलदंतशूलगलशूलगंडशूलशिरःशूलशिरोर्ध्वशूलोदरशूलपादशूल
पादोर्ध्वशूलविनाशयस्वाहा॥ॐ सर्वव्याधिविनाशयस्वाहा॥ॐ सर्वशत्रुवि
नाशयस्वाहा॥ॐ सर्वविस्फोटककलेशं विनाशयस्वाहा॥ॐ ऽग्रामरक्षपररक्षा
मित्ररक्षाग्निरक्षाप्रत्यग्निरक्षापरगतिवाचोरक्षाऽप्रपरगतिवाचोरक्षातेषां
सकलं बध्नामि नमः स्वाहा॥ॐ हरे दहिनी स्वाहा॥ॐ दूं दूं दहिनी स्वाहा॥ॐ स
स्वब्रह्माणं दहदह॥ॐ विध्वय विध्वय विल्प दहदह॥ॐ ज्वरज्वर ईश्वरकुमार दहदह ३

ब्रह्मब्रह्माणं दहदह ॐ हिलि मिलि मायां दहदह॥ॐ नित्यं नित्यं विश्राम
य विश्रामय विश्रामय वारिरणी शूलिनी गारुडी रक्षरक्ष स्वाहा॥ॐ नदी
पुलिनात् पञ्जानाय पर्वते वा वनान्तरे रुद्रस्य रुद्रपंजाना विद्या हंकार रू
पिणी स्वाहा॥ॐ ज्वरज्वर दह दह स्यदेहेन सकल लोह पिंगली कटीम परीकि
लिकि लिकि किलि कमला दंडकुमार दंड न स्पन्द पविल्प वंदिते हंसिनी शंखिनी
चक्रिणी गदिनी शूलिनी रक्षरक्ष स्वाहा॥ अथातो पिंडमंत्राः॥ ॐ ह्रां स्वाहा।
ॐ ह्रां ह्रां स्वाहा॥ ॐ ह्रीं स्वाहा॥ ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा॥ ॐ ह्रूं स्वाहा॥ ॐ ह्रूं ह्रूं स्वाहा॥ ॐ ह्रें स्वाहा
ॐ ह्रें ह्रें स्वाहा॥ ॐ ह्रैं स्वाहा॥ ॐ ह्रैं ह्रैं स्वाहा॥ ॐ ह्रों स्वाहा॥ ॐ ह्रों ह्रों स्वाहा॥ ॐ ह्रौं
स्वाहा॥ ॐ ह्रौं ह्रौं स्वाहा॥ ॐ ह्रं स्वाहा॥ ॐ ह्रं ह्रं स्वाहा॥ ॐ ह्रः स्वाहा॥ ॐ ह्रः ह्रः स्वाहा

ॐ क्रां स्वाहा ॥ ॐ क्रां क्रां स्वाहा ॥ ॐ क्रीं स्वाहा ॥ ॐ क्रीं क्रीं स्वाहा ॥ ॐ क्रूं स्वाहा
ॐ क्रूं क्रूं स्वाहा ॥ ॐ क्रें स्वाहा ॥ ॐ क्रें क्रें स्वाहा ॥ ॐ क्रैं स्वाहा ॥ ॐ क्रैं क्रैं स्वाहा
3 ॐ क्रों स्वाहा ॥ ॐ क्रों क्रों स्वाहा ॥ ॐ क्रौं स्वाहा ॥ ॐ क्रौं क्रौं स्वाहा ॥ ॐ क्रं स्वा-
हा ॥ ॐ क्रं क्रं स्वाहा ॥ ॐ क्रः स्वाहा ॥ ॐ क्रः क्रः स्वाहा ॥ ॐ कं स्वाहा ॥ ॐ कं कं
स्वाहा ॥ ॐ खं स्वाहा ॥ ॐ खं खं स्वाहा ॥ ॐ गं स्वाहा ॥ ॐ गं गं स्वाहा ॥ ॐ घं स्वा-
हा ॥ ॐ घं घं स्वाहा ॥ ॐ ङं स्वाहा ॥ ॐ ङं ङं स्वाहा ॥ ॐ चं स्वाहा स्वाहा ॥ ॐ चं चं स्वा-
हा ॥ ॐ छं स्वाहा ॥ ॐ छं छं स्वाहा ॥ ॐ जं स्वाहा ॥ ॐ जं जं स्वाहा ॥ ॐ झं स्वाहा
ॐ झं झं स्वाहा ॥ ॐ ञं स्वाहा ॥ ॐ ञं ञं स्वाहा ॥ ॐ टं स्वाहा ॥ ॐ टं टं स्वाहा ॥ ॐ ठं
स्वाहा ॥ ॐ ठं ठं स्वाहा ॥ ॐ डं स्वाहा ॥ ॐ डं डं स्वाहा ढं स्वाहा ॥ ॐ ढं ढं स्वाहा ॥ ॥

३

ॐ णं स्वाहा ॥ ॐ णं णं स्वाहा ॥ ॐ तं स्वाहा ॥ ॐ तं तं स्वा ॥ ॐ थं स्वाहा ॥ ॐ थं थं स्वा-
हा ॥ ॐ दं स्वाहा ॥ ॐ दं दं स्वाहा ॥ ॐ धं स्वाहा ॥ ॐ धं धं स्वाहा ॥ ॐ नं स्वाहा ॥ ॐ नं
नं स्वाहा ॥ ॐ पं स्वाहा ॥ ॐ पं पं स्वाहा ॥ ॐ फं स्वाहा ॥ ॐ फं फं स्वाहा ॥ ॐ बं
स्वाहा ॥ ॐ बं बं स्वाहा ॥ ॐ भं स्वाहा ॥ ॐ भं भं स्वाहा ॥ ॐ मं स्वाहा ॥ ॐ मं मं स्वाहा
ॐ यं स्वाहा ॥ ॐ यं यं स्वाहा ॥ ॐ रं स्वाहा ॥ ॐ रं रं स्वाहा ॥ ॐ लं स्वाहा ॥ ॐ लं
लं स्वाहा ॥ ॐ वं स्वाहा ॥ ॐ वं वं स्वाहा ॥ ॐ शं स्वाहा ॥ ॐ शं शं स्वाहा ॥ ॐ षं
स्वाहा ॥ ॐ षं षं स्वाहा ॥ ॐ सं स्वाहा ॥ ॐ सं सं स्वाहा ॥ ॐ हं स्वाहा ॥ ॐ हं हं स्वा-
हा ॥ ॐ ळं स्वाहा ॥ ॐ ळं ळं स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॥ ॐ भूः स्वाहा
ॐ भुवः स्वाहा ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ॐ स्वः स्वः स्वाहा ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा ॥ ॐ वि

४ 5

स्मैव नमः स्वाहा ॥ ओं रुद्राय नमः स्वाहा ॥ ओं रुद्रादित्याय नमः स्वाहा ॥ ओं न
मो भगवते रुद्राय सर्वभूतानां सर्वविघ्नानां सर्वदुष्टानां निग्रहं कुरु कुरु
स्वाहा ॥ ओं आदित्याय नमः स्वाहा ॥ ओं सोमाय नमः स्वाहा ॥ ओं मंगला
य नमः स्वाहा ॥ ओं बुधाय नमः स्वाहा ॥ ओं बृहस्पतये नमः स्वाहा ॥ ओं शुक्रा
य नमः स्वाहा ॥ ओं शनैश्चराय नमः स्वाहा ॥ ओं राहवे नमः स्वाहा ॥ ओं केतवे नमः
स्वाहा ॥ ओं कुलमुखाय नमः स्वाहा ॥ ओं गणेश्वराय नमः स्वाहा ॥ ओं दुर्गे भग
शांतिकपंतंगं ॥ भूतप्रेतपिशाचराक्षससर्ववेतालवृश्चिकभयं विनाशय
स्वाहा ॥ ओं नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॥ ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः स्वाहा ॥
ओं क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रैं क्रों क्रौं क्रं क्रः स्वाहा ॥ ओं शिं शिवाय नमः स्वाहा ॥ ओं सं सू ४

र्याय नमः स्वाहा ॥ ओं सों सोमाय नमः स्वाहा ॥ ओं मं मंगलाय नमः स्वा
हा ॥ ओं बुं बुधाय नमः स्वाहा ॥ ओं बृं बृहस्पतये नमः स्वाहा ॥ ओं शुं शुक्रा
य नमः स्वाहा ॥ ओं शं शनैश्चराय नमः स्वाहा ॥ ओं रां राहवे नमः स्वाहा ॥
ओं कें केतवे नमः स्वाहा ॥ ओं महाशांतिकं भूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्म
राक्षससर्ववेतालवृश्चिकभयं विनाशय स्वाहा ॥ ओं नमो भगवते महारु
द्राय स्वाहा ॥ ओं नमो महाभैरवाय स्वाहा ॥ ओं नमो महागणेश्वराय स्वा
हा ॥ ओं नमो महादुर्गायै स्वाहा ॥ ओं सिं सिंहशार्दूलगजेन्द्रगत सर्वज्ञा
ध्रादिमृगान्वधाम्नि नमः स्वाहा ॥ ओं शं शस्त्रैव धाम्नि नमः स्वाहा ॥ ओं
प्रं प्रस्त्रैव धाम्नि नमः स्वाहा ॥ ओं वां वाहैव धाम्नि नमः स्वाहा ॥ ओं गं ग
तिव धाम्नि नमः स्वाहा ॥ ओं नें नेत्रैव धाम्नि नमः स्वाहा ॥ ओं श्रों श्रोत्रैव

॥५॥
ध्नामि नमः स्वाहा॥ ॐ पां पादं बध्नामि नमः स्वाहा ॐ प्रां प्रासनं बध्ना
मि नमः स्वाहा॥ ॐ सं सर्वं बध्नामि नमः स्वाहा॥ ॐ सं सर्वं मायां वा ध्ना
मि नमः स्वाहा॥ ॐ सं सर्वजंतुं बध्नामि नमः स्वाहा॥ ॐ वं वं ध्वं वंधनं कुरु
कुरु स्वाहा॥ ॐ पंचयोजनविस्तीर्णं रुद्रो वदति मंडलं॥ तद्बंधनं कुरु कुरु
स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा॥ ॐ नमो भैरवाय स्वाहा॥ ॐ नमो
गणेश्वराय स्वाहा॥ ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा॥ ॐ इन्द्र दिशायां ऐरावतारूढं
वज्रहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिमिन्द्रमण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा
ॐ इन्द्रमण्डलं बंध बंध रक्ष रक्ष मा चल मा चल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा॥ ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ॥५॥

वार १२ नमो ॐ
ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा॥ ॐ दुर्गायै स्वाहा॥ ॐ अग्नेय्यां दिशायामजारू
ढं शक्तिहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिमग्निमण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा
ॐ अग्निमंडलं बंध बंध रक्ष रक्ष मा चल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा॥ ॐ ह्रां
ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा॥ ॐ नमो भैरवाय स्वाहा॥ ॐ
नमो गणेश्वराय स्वाहा॥ ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा॥ ॐ दक्षिणा दिशायां महिषा
रूढं दंडहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिं यममंडलं बध्नामि नमः स्वाहा
ॐ यममंडलं बंध बंध रक्ष रक्ष मा चल मा चल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा॥ ॐ ह्रां
ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा॥ ॐ नमो भैरवाय स्वाहा॥ ॐ
नमो गणेश्वराय स्वाहा॥ ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा॥ ॐ निरृति दिशायां प्रे
तारूढं खड्गहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिं निरृतिमण्डलं बध्नामि नमः स्वाहा

६ ॐ निर्ऋतिमण्डलं बंध बंध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॥ ॐ नमो भैरवाय स्वा
6 हा ॥ ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॥ ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा ॥ ॐ पश्चिमदिशायां
मकरारूढं पाशहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिं वरुणमण्डलं वध्नामि
नमः स्वाहा ॥ ॐ वरुणमण्डलं बंध बंध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य मा
क्रम्य स्वाहा ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॥ ॐ नमो
भैरवाय स्वाहा ॥ ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॥ ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा ॥ ॐ वायु
दिशायां मृगारूढं धनुर्हस्तं दिग्देवाधिपतिं वायुमण्डलं वध्नामि नमः स्वाहा
ॐ वायुमण्डलं बंध बंध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा ॥ ॐ
ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॥ ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ॥

ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा ॐ उत्तरदिशायां नरारूढं
गदाहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिं कुवेरमण्डलं वध्नामि नमः
स्वाहा ॐ कुवेरमण्डलं बंध बंध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्र
म्य स्वाहा ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॐ न
मो भैरवाय स्वाहा ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा
ॐ ईशानदिशायां वृषभारूढं त्रिशूलहस्तं परिवारसहितं दि
ग्देवाधिपतिं ईशानमण्डलं वध्नामि नमः स्वाहा ॐ ईशानमण्डलं बं
ध बंध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा ॐ ह्रां ह्रीं
ह्रूं फट् स्वाहा ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॐ नमो भैरवाय
स्वाहा ॥

ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा ॐ अंतरिदादि प्रागो
लोष्ठ नागारूढं त्रिशूलहस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधिपतिं का
लाग्निरुद्रमंडलं वध्नामि नमः स्वाहा ॐ कालाग्निरुद्रमण्डलं
बंध बंध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा ॐ ह्रां ह्रीं
हूं फट् स्वाहा ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॐ नमो भैरवाय स्वा
हा ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा ॐ वि[illegible]दिशा
यां गरुडारूढं शंखचक्रगदापद्महस्तं परिवारसहितं दिग्देवाधि
पतिं विष्णुमण्डलं वध्नामि नमः स्वाहा ॐ विष्णुमण्डलं बंध बंध रक्ष रक्ष
माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा ॐ ह्रां ह्रीं हूं फट् स्वाहा ॐ नमो
भगवते रुद्राय स्वाहा ॥

ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा
ॐ भगवंतं ब्रह्मणो दिशायां हंसारूढं ब्रह्मसूत्रहस्तं परिवारसहितं दिग्देवा
धिपतिं ब्रह्मणो मण्डलं वध्नामि नमः स्वाहा ॥ ॐ ब्रह्माण्डमण्डलं बंध बंध
रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वाहा ॐ ह्रां ह्रीं हूं फट् स्वाहा
ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ॐ नमो दुर्गायै स्वा
हा ॐ नमो ऽधोदिशायां कूर्मारूढं लोष्ठनागं शंकुपरिघहस्तं परि
वारसहितं दिग्देवाधिपतिं पातालमंडलं वध्नामि नमः स्वाहा ॐ पा
तालमंडलं बंध बंध रक्ष रक्ष माचल माचल माक्रम्य माक्रम्य स्वा
हा ॐ ह्रां ह्रीं हूं फट् स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॐ नमो भैरवा

यनमः ॐनमोगणेश्वरायनमः ॐनमोदुर्गायैनमः ॐमहाश्मशानतिष्ठ
भूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसवेतालसर्वशाक्किकभयंविनाशय
४ स्वाहा॥ ॐपूर्वदिशायांवज्रकानामराक्षसस्तस्यवज्रकस्याष्टादशको
टिसहस्रस्यपिशाचस्यदिशांवध्नामिनमःस्वाहा। ॐग्रस्त्रायफट्
स्वाहा ॐनमोभगवतेरुद्रायस्वाहा ॐनमोभैरवायस्वाहा ॐनमो
गणेश्वरायस्वाहा ॐनमोदुर्गायैस्वाहा ॐदक्षिणस्यांदिशायांएक
पिंगलीनामराक्षसस्तस्यैकपिंगलिकस्याष्टादशकोटिसहस्रस्यपि
शाचस्यदिशांवध्नामिनमःस्वाहा ॐग्रस्त्रायफट्स्वाहा ॐनमो
भगवतेरुद्रायस्वाहा ॐनमोभैरवायस्वाहा ॐनमोगणेश्वरायस्वाहा २

ॐनमोदुर्गायैस्वाहा ॐनैरृत्यादिशायांमारीचीनामराक्षसस्तस्य
मारीचिकस्याष्टादशकोटिसहस्रस्यपिशाचस्यदिशांवध्नामिनमः
स्वाहा ॐग्रस्त्रायफट्स्वाहा ॐनमोभगवतेरुद्रायस्वाहा ॐनमोभैर
वायस्वाहा ॐनमोगणेश्वरायस्वाहा ॐनमोदुर्गायैस्वाहा ॐप
श्चिमदिशायांमकरोनामराक्षसस्तस्यैकरस्याष्टादशकोटि
सहस्रस्यपिशाचस्यदिशांवध्नामिनमःस्वाहा ॐग्रस्त्रायफ
ट् ॐनमोभगवतेरुद्रायस्वाहा ॐनमोभैरवायस्वाहा ॐ
नमोगणेश्वरायनमःस्वाहा ॐनमोदुर्गायैस्वाहा ॐवा
यव्यादिशायांकूष्माण्डकोनामराक्षसस्तस्यकूष्माण्डकस्या

५ शादशाकोटिसहस्रस्यपिशाचस्यादिशां वधामिनमः स्वाहा ॐ नम्र
स्त्रायफट् ॐ नमोभगवते रुद्राय रुद्राय स्वाहा ॐ नमो भैरवाय
१ स्वाहा ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॐ नमो दुर्गाये स्वाहा ॐ हि
मवन्नमोत्तर दिशायां महाभीमनाम सादासस्तस्य महाभीमस्या
शादशाकोटिसहस्रस्यपिशाचस्यादिशां वधामिनमः स्वाहा ॐ
नमस्त्रायफट् ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॐ नमो भैरवाय नमः
नमः स्वाहा ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॐ नमो दुर्गायै नमः स्वाहा
ॐ नमो ईशानदिशायां भैरवो नाम सादासस्तस्य भैरवस्याष्टा
दशाकोटिसहस्रस्य पिशाचस्यादिशा चस्यादिशां वधामिनमः स्वाहा
ॐ नमस्त्रायफट् ॐ नमो रुद्राय स्वाहा ॥
भगवति
५

नमो भैरवाय स्वाहा ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॐ नमो दुर्गायै स्वाहा ॐ अन्त
रिक्ष दिशायां अनंतरूपो नाम राक्षसस्तस्य अनंतरूपस्य अष्टादशाकोटिसहस्रस्य
पिशाचस्य दिशां वधामि नमः स्वाहा ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा ॐ नमो भगवते रुद्रा
य स्वाहा ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॐ दुर्गायै नमः स्वाहा
ॐ ब्रह्मणो दिशायां ब्रह्मरूपो नाम राक्षसस्तस्य ब्रह्मरूपस्य अष्टादशाकोटि
सहस्रस्य पिशाचस्य दिशां वधामि नमः स्वाहा ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा ॐ नमो
भगवते रुद्राय स्वाहा ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॐ नमो
दुर्गायै स्वाहा ॐ महाशान्तिकभूतप्रेतपिशाचराक्षसब्रह्मराक्षसवेताल
सर्पवृश्चिकभयविनाशाय स्वाहा ॐ शिखायां ह्रीं महाब्रह्माणी मे रक्षतु ॐ
ह्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ब्लूं हूं फट् स्वाहा शिरो मे रक्षतु माहेश्वरी ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं हूं फट्
स्वाहा ॐ भुजौ मे रक्षतु वाराही ॐ ह्रूं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रौं ब्लूं हूं फट् स्वाहा ॐ उदरं मे रक्ष

गुरु भ्रामरी ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रौं धं हूं फट् स्वाहा ॐ पादौ मे रक्षतु महालक्ष्मी ॐ
ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रौं धं हूं फट् स्वाहा ॐ कटिं मे रक्षतु चामुण्डा ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रौं धं
हूं फट् स्वाहा ॐ जंघे मे रक्षतु नारसिंही ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रौं धं हूं फट् स्वाहा ॐ
नमो भगवते रुद्राय स्वाहा ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ॐ नमो गणेश्वराय स्वाहा ॐ
10 नमो दुर्गायै स्वाहा ॐ महाशान्तिके दुःस्वपिप सि नाम महाविद्यां महादेवस्य स-
न्निधौ एकविंशतिवारेण जपित्वा सिद्धिमाप्नुयात् स्त्री वा पुरुषो वापि
पाठं पत्नं समाचरेत् पुःपठेत् पाठयेद्वापि सर्वकार्येषु सर्वदा दुष्टानां मा-
रणं चैव साधकानां सुखावहम् सर्वकार्येषु सिद्धिः स्यात् शान्तिकर्मणि
विशेषतः इति श्रीशिवप्रोक्तं महाविद्यास्तोत्रं समाप्तम् पठित्वा इमां महावि-
द्यां महादेवस्य सन्निधौ एकविंशतिवारेण अवश्यं सिद्धिमाल-
भेत् यदि न सिद्धिः तदा रुद्रापि ब्रह्महा भवेत् पठित्वा परं न पठेत्तदा सत्यं ब्रह्महा भवेत् अथ १०

दो ब्राह्मणेभ्यः सुवर्णरत्नादि वस्त्रादि दद्यात् अवश्यं सिद्धिमालभेत् ॥ यदि
न सिद्ध्यति ॥ स्त्री वा पुरुषो वापि कण्ठे यत्तिखायां धारयेत् द्रावणोच्चा-
टनं चैव मारणं चैव पारणं सर्वकार्येषु सिद्धिः स्यात् शान्तिकर्मणि विशेष-
तः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं त्रिपुरे ऽमृते वा ऽमृकीं वौं ऊर्ध्वं य स्वाहा अथ प्रयोगः
अथोत्तरे एकविंशति दिनपर्यन्तं शर्करानैवेद्यं हविष्यान्नं गुग्गुलतिला-
ज्यमिलितां सह तत्क पूर्व पुष्पधूपैर्होमं कृत्वा तदनन्तरं जपं कुर्यात्तदा सिद्धि-
प्रदं भवेत् एकविंशतिवारेण जपित्वा सिद्धिमाप्नुयात् ब्राह्मणांस्तोषये-
त् स्त्रियं कुमारी च सुवासिनीं होमान्ते दक्षिणां दद्यात् द्विज शान्तं विव-
र्जितः शतसुवर्णं मूल्यं च मध्यमार्धशतं स्मृतं तदर्धं तु कनिष्ठा स्या

१८० तदर्द्धमन्यथापिवा ॥ अतोन्यूनानकर्तव्या काम्यकर्म्मणिदक्षिणा ॥ यः
प्रथमकल्पशो योनिकल्पनिवर्त्तकः समप्राप्तिफलंतस्यकर्म्मणः काम्य
कर्म्मकृत ॥ अन्नहीनोदहेद्राष्ट्रं मंत्रहीनस्तुऋत्विजम् दक्षिणाविहीने त्रो४
स्तुयजमानंनहिनस्तिसः ॥ राज्ञोनाराजपुरुषोवायजमानःसपुष्कलः
महाविद्याविततुतेगुरुवाज्ञाचपुरःसरम् यः कश्चिदयमामन्त्र्यः संप्रा
प्नोषत्रवर्त्तते महाविद्याविततुते विजरणाछत्रविवर्जितः इतिश्रीशिव
प्रोक्तं महाविद्यास्तोत्रम् संपूर्णं ॥ अथहोमविधिः कुण्डेवास्थंडिले
९.२ वामूलेनवीक्ष्यफट् इतिशरेण संतोक्ष्य तेनैव संप्रोक्ष्य हुमिति ॥ अभ्युक्ष्य
मूलमुच्चार्य फट्स्थापनम् इतिसंपूज्य प्रागग्रान् उदगग्रान्तिविस्तरे रेखा कर्तव्या ११०

प्रागग्रासु ॐ मुकुंदायनमः ॐ ईशानायनमः ॐ पुरंदरायनमः इतिदक्षिणे पूजयेत
उदगग्रेषु ॐ ब्रह्मणेनमः ॐ वैवस्वतायनमः ॐ इन्द्रायनमः इतिपूजयेत सुंद
रीपक्षेतुसर्वत्रबहुतारिप्रयोगः ॥ तद्यथा ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ब्रह्मणेनमः
एवंक्रमेणपूजयेत ॥ ततऐशान्यांहस्तविस्तारेणतिर्यग्लिखितवेदिकांकृत्वा
तत्रकुण्डं यथोक्तरूपेण स्थापयित्वा तत्रदेवतापंचोपचारैः पूजयेत् ततः
कुंडमध्येषट्कोणवृत्तत्रिकोणंतद्बहिर्हितं अष्टदलपद्मं तद्बहिः चतुरस्रं चतु
द्वारसमेतं लिखित्वा तदुपरि मूलेन पुष्पांजलिंदद्यात् सुंदरीपक्षेतुवाला
याः ततसर्वाणि प्रणवेनाभिषिंच्य वह्नेर्योगपीठं समर्चयेत् तद्यथा
कर्णिकोपरि आधारशक्त्यादीन्संपूज्ययेत् अग्न्यादिकोणचतुष्केषु

ॐ ब्रह्माण्यै नमः ॐ विज्ञानाय नमः ॐ वैराग्याय नमः ॐ ऐश्वर्याय नमः पू-
र्वादिषु ॐ अधर्माय नमः ॐ अज्ञानाय नमः ॐ अवैराग्याय नमः ॐ
अनैश्वर्याय नमः ॐ मध्ये अनंताय नमः ॐ पद्माय नमः ॐ अं अर्क-
मंडलाय द्वादशकलात्मने नमः ॐ सोममण्डलाय षोड-
शकलात्मने नमः ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने न-
मः ततः केसरेषु पूर्वादिमध्ये च ॐ पीतायै नमः ॐ श्वेतायै नमः
ॐ अरुणायै नमः ॐ कृष्णायै नमः ॐ धूम्रायै नमः ॐ ज्योतिषायै
नमः ॐ विस्फुलिंगिन्यै नमः ॐ रुचिरायै नमः ॐ ज्वालायै नमः ततो वं वह्न्या-
सनाय नमः इति पूजयेत् ततो ॐ वागीश्वरीमृतुस्नातां ॥
१२

नीलेन्दीवरलोचनां वागीश्वरेण संयुक्तां देवीं ध्यात्वा समाऽऽपयेत्
ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः ॐ ह्रीं वागीश्वर्यै नमः इति मंत्रेण पंचोपचारैः
संपूज्य पूजयेत् सूर्यकान्तादिसंभूतं यद्वा काष्ठघर्षणाज्जन्यां वा श्रोत्रिय-
गेहजं वह्निमानयेत् सुंदरीपद्हन्तुकामेश्वरीं पूजयेत् ततो वह्निपात्रेणि
ध्याय वह्नेर्योगपीठाय नमः चतुर्दिक्षु ॐ कामायै नमः ॐ ज्येष्ठायै न-
मः ॐ रौद्र्यै नमः ॐ भ्रम्विकायै नमः ततो मूलमुच्चार्य ॐ प्रमुखे दे-
वतायाः कुण्डाय नमः इति संपूज्य तदधो वागीश्वरीं तद्द्वयनास्वरूपांरि
तुवंतीं ध्यात्वा संपूजयेत् पश्चात् वह्निमानीय मूलेन वीक्षयेत् इति संना
कुहूमिति संप्रोक्षयेदिति ॐ वुं भ्रु हूं ततस्माद्वह्निमुकुन्त्य हूं फट् क्रव्यादेभ्यः स्वाहा

२५०

इत्यनेन क्रव्यादांशं परित्यज्य वह्निरूपं इति संरक्ष्य हुं मन्त्रेण गत्वा धे
नुमुद्रया पाद्यं मन्त्रीकृत्य बाहुभ्यां समुद्धृत्य कुण्डोपरि त्रिर्भ्रामयित्वा जानुभ्यां
भ्यां महीतले क्षिप्त्वा बीजं बुध्वात्मानोभिमुखं देव्या वागीश्वर्या योनौ क्षिपेत्
13 ततो ओं ह्रीं वह्निमूर्तये नमः इति पूजयेत् ओं वं वह्निचैतन्याय नमः इ
ति चैतन्यं तत्र संयोज्य ओं चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञा
ज्ञापय स्वाहा॥ इति मन्त्रेण ज्वालयेत् ततोऽग्निं प्रज्वलितं वंदे जातवेदं हुताश
नं सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतोमुखं इत्युपतिष्ठेत् ततः अग्नेस्त्वं
स्वाहा अमुकनामासि नामधेयं कृत्वा ओं वैश्वानर जातवेद इहावह लो
हिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इत्यनेन मन्त्रेण गन्धादिभिः संपूज्य ओं अ
ग्नेर्हिरण्यादि सप्तजिह्वाभ्यो नमः ओं सहस्रार्चिषे हृदयादिभ्यो नमः ९३

ओं इन्द्रादि अग्निषडङ्गेभ्यो नमः ओं अग्नये जातवेदसे इत्यष्टमूर्तिभ्यो
नमः तद्बाह्ये ओं ब्राह्म्यादि अष्टशक्तिभ्यो नमः तद्बहिः ओं पद्माद्य
ष्टनिधिभ्यो नमः तद्बहिः ओं इन्द्रादि लोकपालेभ्यो नमः तद्बाह्ये ओं व
ज्राद्यस्त्रेभ्यो नमः ततः प्रादेशमात्रे कुशपत्रद्वयं घृतमध्ये निक्षिप्य स
व्यापसव्यभागेषु इडां पिङ्गलां सुषुम्नां मनसा ध्यात्वा होमं कुर्यात् इ
ति स्रुवं संप्रोक्ष्य स्रुवेन दक्षिणभागादाज्यं गृहीत्वा ओं अग्नये स्वाहा
इत्यग्नेर्दक्षनेत्रे जुहुयात् पुनर्दक्षिणतो नमः तथैव वामभागादाज्यं
गृहीत्वा ओं सोमाय स्वाहा॥ इति वामनेत्रे जुहुयात् ततो मध्यभागादाज्यं
गृहीत्वा ओं अग्नीषोमाभ्यां नमः स्वाहा॥ इति अग्नेर्ललाटे जुहुयात् पु
नर्दक्षिणतो नमः इति घृतं गृहीत्वा ओं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इति मुखे

रम०

14 ततो महाव्याहृतिहोमः ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवः स्वाहा ॐ स्वः स्वाहा ॐ वैश्वा
नरजातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इति त्रिवारं जुहुयात्
ततोऽग्नौ मूलेन पीठपर्वकं देवतां संपूज्य तन्मुखे चानेन मूलमंत्रेण पंच
विंशतिवारं जुहुयात् ततो वह्नि देवतयोरैक्यं विभाव्य मूलमंत्रेणैकाद
शाहुतिं जुहुयात् ततो मूलमंत्रस्यांगदेवताभ्यः स्वाहा एवमावरणदेवता
भ्यः स्वाहा अङ्गपश्चात्त्र्येकैकाहुतिं जुहुयात् ततः संकल्पं विधाय ॐ
अद्येहेत्यादि अमुकदेवताप्रीतिकाम अमुकमंत्रेण यथासंख्याहुतिहो
मकर्माहं करिष्ये एवं कृत्वा द्रव्येण होमं कुर्यात् ततो मंगलनामानम १५
ग्निमभ्यर्च्य फलपुष्पादिकं गृहीत्वा मूलेन पूर्णाहुतिं दद्यात् संहारमु

द्रया स्वस्वदेवता हृदि समानीय क्षमस्वेति वह्निं विसृज्य ततो दुग्धेन ॐ
पृथिवि त्वं शीतला भव इति भूमौ क्षीरं निक्षिप्य दक्षिणां दत्वा अच्छिद्र
वधारणं कुर्यात् इति संक्षेपेण तन्त्रोक्तहोमविधिः समाप्तः विद्याकामेन हो
तव्यं पद्मैर्मधुसमन्वितैः धनकामेन होतव्यं तिलाज्यमधुसंयुतैः वंधु
कपुष्पहोमेन दशांचकुरुते नरः अथ पुष्पनित्यहोमः ततः स्थंडिलं कुर्याद्वे
वलं भूमिं वा अर्घोदकेन संप्रोक्ष्य इति स्त्रोरेखा समालिखेत् ततोऽग्निमानी
य ॐ क्रव्यादेभ्यो नमः इति क्रव्यादांशं परित्यज्य मूलमुच्चार्य ॐ भूर्भुवः
स्वः इत्यनेन रेखोपरि स्थापयित्वा स्वाहान्तमूलेन त्रिधा हुत्वा षडंगहोमं कुर्यात्
ततोऽग्नौ देवीमावाह्य संपूज्य स्वाहान्तमूलेन षोडशाहुतिं जुहुयात् ॥ ततो
देवीं स्तुत्वा नत्वा चेद्गमस्तुले विसृज्य इति श्यामादिविद्यानां पूर्वादिदि
अग्न्याग्नि तैलतिलैः ॥ ॐ पृथिवि तां गर्भे रत्नधाय स्वाहा इत्यष्टाहुतिं जुहुयात्

ॐ वं रुरुभैरवाय नमः स्वाहा ॐ चंडभैरवाय स्वाहा ॐ क्रोधभैरवाय स्वाहा
ॐ उन्मत्तभैरवाय स्वाहा ॐ कपालिने नमः स्वाहा ॐ भीषणाय स्वाहा
ॐ संहारभैरवाय स्वाहा प्रत्येकेनाष्टाहुतिं जुहुयात् इति नित्यहोमविधिः
समाप्तः शिवाय नमः दुर्गायै नमः ॥

